श्री लक्ष्मी आराधना (Shri Laxmi Aradhana)

सम्पूर्ण विश्व में प्राणी यदि सबसे अधिक किसी की कामना करता है तो वह है-धन । धन की प्राप्ति के लिए व्यक्ति कुछ भी करने के लिए तत्पर रहता है। मां लक्ष्मी की कृपा से ही व्यक्ति को तेज, ओज, बुद्धि एवं बल का वैभव प्राप्त होता है, वह सर्वशक्तिमान कहलाने के स्तर पर पंहुचता है। जिस पर लक्ष्मी की कृपा बरसती है, संसार उसके आगे नतमस्तक हो जाता है।

तन्त्र शास्त्रों के अनुसार दस महाविद्याओं में 'श्री कमला' अन्तिम दसवीं महाविद्या कही जाती हैं। इन्हीं के द्वारा विश्व का पालन होता है। श्रीमद् भागवत के आठवें स्कन्ध के आठवें अध्याय में इनके उद्भव की कथा आयी है। देवताओं और राक्षसों के द्वारा अमृत-प्राप्ति के लिए किये समुद्र-मंथन के परिणाम स्वरूप इनका उद्भव हुआ और इन्होंने भगवान विष्णु का वरण अपने पति के रूप में किया। इस प्रकार ये वैष्णवी शक्ति है और भगवान विष्णु की लीला सहचरी हैं, इस प्रकार इनकी उपासना जगदाधार-शक्ति की उपासना है। देवता, मानव, सिद्ध, गन्धर्व और दानव - सभी इनकी कृपा के बिना पंगु है।

लक्ष्मी तन्त्र के अनुसार इनके दस मुख्य नाम हैं - महामाया, महाकाली, महामारी, क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, कृष्णा, एक-वीरा, काल-रात्रि एवं दुरत्यया। जो भी भगवती के इन दशों नामों का भक्ति-पूर्वक स्मरण करता है, उसे सभी प्रकार से सुख, शान्ति की प्राप्ति होती है। स्थिर सम्पत्ति, उत्तम नारी एवं पुत्रों की प्राप्ति हेतु इसकी उपासना करनी चाहिए।

साधकों के लिए मैं यंहा मां लक्ष्मी के कुछ अति विशिष्ट एवं गोपनीय प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ। इनमें सबसे पहले लक्ष्मी-पंज्र-स्तोत्र का प्रस्तुतीकरण है। अर्थाभाव से जूझ रहे साधकों को निम्नवत् इसका प्रयोग करना चाहिए -

- बेल-वृक्ष के पत्ते के पृष्ठ भाग पर कमला-यन्त्र बनाकर उसके छहों कोणों में मंत्राक्षर लिखकर उसका पूजन करें, फिर भगवती का पूजन करके इस स्तोत्र का पाठ करें।

- विष्णु-सहस्त्र नाम का पाठ करके इस स्तोत्र का पाठ करें। इसके बाद पुनः विष्णु-सहस्त्र-नाम का एक पाठ करें। इस क्रम को पचास

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

हजार की सख्या में करने से साधक को महालक्ष्मी की पूर्ण कृपा प्राप्त होती है। इसकी आवृति संकल्प के साथ करें।

- यदि उपरोक्तानुसार पाठ करने में सक्षम न हों तो कम से कम एक क्रम नित्य प्रति करें।

साधना-काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए फलाहार अथवा शुद्ध एवं सात्विक भोजन करें।

प्रारम्भिक कर्म के उपरांत हाथ में जल लेकर विनियोग करें:-

विनियोग :- ॐ अस्य श्री लक्ष्मी-पंजर-महा मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्री महालक्ष्मीः देवता, श्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्रिये कीलकं, मम सर्वाभिष्ट सिद्धयर्थे श्री लक्ष्मी-पंजर-स्तोत्र पाठे विनियोगः।

विनियोग करने के उपरांत हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें।इसके बाद ऋष्यादि न्यास करें-

ऋबयादि-न्यास :- **ॐ श्रीं ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। श्री महा लक्ष्मी देवतायै नमः हृदि। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः नाभौ। श्रिये कीलकाय नमः पादयोः। मम सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थे श्री लक्ष्मी-पंजर-स्तोत्र पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।**

इसके बाद कर-न्यास करें -

कर-न्यास :-

ॐ श्रीं ह्रीं विष्णु-वल्लभायै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं जगज्जनन्यै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि सेवितायै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि-दात्र्यै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं वांछित-पूरिकायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

कर न्यास के उपरान्त अंग न्यास करें, यथा-

अंग-न्यास :-

ॐ श्रीं ह्रीं विष्णु-वल्लभायै हृदयाय नमः। ॐ श्रीं ह्रीं जगज्जनन्यै शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं सिद्धि-सेवितायै शिखायै वषट्। ॐ श्रीं ह्रीं

DR RUPAK NATH

सिद्धि-दात्र्यै कवचाय हुम्। ॐ श्रीं ह्रीं वांछित-पूरिकायै नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा अस्त्राय फट्।

न्यास क्रिया पूर्ण कर लेने के उपरान्त भगवती का ध्यान करें-

ध्यान

ॐ वंदे लक्ष्मीं पर-शिव-मयीं, शुद्ध-जाम्बू-नदाभाम्।
तेजोरूपां कनक-वसनां, सर्व भूषोज्ज्वलांगीम्।।
बीजापूरं कनक-कलशं, हेमपद्मं दधानामाद्याम्।
शक्तिं सकल-जननीं, विष्णु-वामांक-संस्थाम्।।
शरणं त्वां प्रपन्नोऽष्मि, महा-लक्ष्मि! हरि-प्रिये! ।
प्रसादं कुरू देवेशि!, मयि दुष्टेऽपराधिनि।।
कोटि-कन्दर्प- लावण्यां, सौन्दर्यैक-स्वरूपताम्।
सर्व-मंगल-मांगल्यां, श्री मां शरणं ब्रजे।।

पाठ

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो विष्णु-वल्लभायै, महा-मायायै कं खं गं घं ङं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष धनं धान्यं श्रियम्, समृद्धिं देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो जगज्जनन्यै, वात्सल्य-निधये चं छं जं झं ञं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष श्रियं प्रतिष्ठाम्, वाक-सिद्धिं मे देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धि-सेवितायै,
सकलाभिष्ट-दान-दीक्षितायै टं ठं डं ढं णं नमस्ते नमस्ते ।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष सर्वतोऽभयं,
देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमः सिद्धि-दायै,

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

महा-अचिन्त्य-शक्तिकायै तं थं दं धं नं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष मे, सर्वाभीष्ट-सिद्धिम् -
देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं नमो वांछित-पूरिकायै,
सर्व-सिद्धि-मूल-भूतायै पं फं बं भं मं नमस्ते नमस्ते।
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष मे मनो-वांछिताम्,
सर्वार्थ-भूतां सिद्धिं देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कमले कमलालये मह्यम्,
प्रसीद-प्रसीद महा-लक्ष्मि! तुभ्यं नमो नमस्ते।
जगद्धितायै यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं नमस्ते नमस्ते,
मां पाहि-पाहि रक्ष-रक्ष मे वश्याकर्षण-मोहन-
स्तम्भनोच्चाटन-ताडनाचिन्त्य-शक्ति-वैभवम्,
देहि-देहि श्रीं श्रिये नमः स्वाहा।।

श्री लक्ष्मी माला-मंत्र

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धात्र्यै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं बीज-रूपायै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं विष्णु-वल्लभायै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सिद्धयै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं बुद्धयै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं धृत्यै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं मत्यै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं कान्त्यै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं शान्त्यै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं सर्वतोभद्ररूपायै नमः स्वाहा ।
ॐ श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा ।

ॐ नमो भगवति ! ब्रह्मादि-वेद-मातर्वेदोद्भवे ! वेद-गर्भे ! सर्व-शक्ति-शिरोमणे श्री हरि-वल्लभे ! ममाभीष्ट पूरय-पूरय मां सिद्धि-भाजनं कुरू-कुरु अभयं कुरू-कुरू

सर्व-कार्येषु ज्वल-ज्वल प्रज्वल-प्रज्वल मे सुप्त-शक्तिं दीपय-दीपय ममाहितान् नाशय-नाशय असाध्य-कार्यं साधय-साधय ह्रीं ह्रीं ह्रीं ग्लौं ग्लौं ग्लौं श्रीं श्रिये नमः स्वाहा ।

नोटः- इस माला मंत्र का १०८ बार जप करें। विशेष प्रभाव के लिए इसका हवन भी किया जा सकता है । हवन में गुग्गुल, शहद, कमल बीज, काले तिल, बूरा, केशर, माल पुए, खीर, शुद्ध घी, पंच मेवा आदि का प्रयोग किया जाता है।

श्री लक्ष्मी-कवच

ॐ शिरो मे रक्षताद् देवी, पद्मा पंकज-धारिणी ।
भालं पातु जगन्माता, लक्ष्मीः पद्मालया च मे ।।
मुखं पायान्महा-माया, दृशौ मे भृगु-कन्यका ।
घ्राणं सिन्धु-सुता पायान् नेत्रे मे विष्णु-वल्लभा ।।
कण्ठं रक्षतु कौमारी, स्कन्धौ पातु हरि-प्रिया ।
हृदयं मे सदा रक्षेत् सर्व-शक्ति-विधायिनी ।।
नाभिं सर्वेश्वरी पायात् सर्व-भूतालया च मे ।
कटिं च कमला पातु, ऊरू ब्रह्मादि-देवता ।।
जंघे जगन्मयी रक्षेत्, पादौ सर्व-सुखावहा।
श्री वीज-वास-निरता, सर्वांगे जनकात्मजा ।।
सर्वतोभद्र-रूपा मामव्याद् दिक्षु विदिक्षु च ।
विषमे संगटे दुर्गे, पातु मां व्योम-वासिनी ।।

DR. RUPNATHJI(DR. RUPAK NATH)